Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

मध्य युग में भारतीय शिक्षा का अध्ययन

Dr. Anil Kumar*

B.P.S.M.V., Regional Center, Lula Ahir Teaching Assistant, History

शोध सार – *भारत की प्राचीन शिक्षा आध्यात्मिमकता पर आधारित थी। मध्ययुगीन भारत में दो प्रकार की शिक्षा संस्थाएं थी मकतब और मदरसे।. इस काल में हिन्दू व मुसलमानों की अपनी-अपनी शिक्षण पद्धियां, संस्थाएं एवं पाठ्यक्रम थे। मुस्लिम आक्रमणों के फलस्वरूप तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला आदि प्राचीन उच्च शिक्षा के केन्द्र (विश्वविद्यालय) नष्ट हो गये1 एवं फिर अनेक सदियों तक हिन्दू शिक्षा के विशाल केन्द्र उत्तरी भारत में स्थापित न किये जा सके। यह कहना न्यायसंगत न होगा कि इन विश्वविद्यालयों के अन्त के साथ ही प्राचीन हिन्दू-शिक्षा पद्धति भी समाप्त हो गयी। अब इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। इस शोध-पत्र में मध्य युग में भारतीय शिक्षा का अध्ययन किया गया है।.*

मुख्य शब्द – *आध्यात्मिमकता, शक्षण पद्धियां, संस्थाएं एवं पाठ्यक्रम, केन्द्र और भारतीय शिक्षा*

----------X----------

जब से मानव सभ्यता का सूर्य उदय हुआ है तभी से भारत अपनी शिक्षा तथा दर्शन के लिए प्रसिद्ध रहा है यह सब भारतीय शिक्षा के उद्देश्यों का ही चमत्कार है कि भारतीय संस्कृति ने संसार का सदैव पथ-प्रदर्शन किया और आज भी जीवित है भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का भी इतिहास है। भारतीय समाज के विकास और उसमें होने वाले परिवर्तनों की रूपरेखा में शिक्षा की जगह और उसकी भूमिका को भी निरंतर विकासशील पाते हैं। सूत्रकाल तथा लोकायत के बीच शिक्षा की सार्वजनिक प्रणाली के पश्चात हम बौद्धकालीन शिक्षा को निरंतर भौतिक तथा सामाजिक प्रतिबद्धता से परिपूर्ण होते देखते हैं। बौद्धकाल में स्त्रियों और शूद्रों को भी शिक्षा की मुख्य धारा में सम्मिलित किया गया। सर्वप्रथम 1781 ई. में बंगाल के गवर्नर-जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने फारसी एवं अरबी भाषा के अध्ययन के लिए कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) में एक मदरसा खुलवाया। 1784 ई. में हेस्टिंग्स के सहयोगी सर विलियम जोन्स ने 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' की स्थापना की, जिसने प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन हेतु महत्त्वपूर्ण प्रयास किया। 1791 ई. में ब्रिटिश रेजिडेंट डंकन ने बनारस में एक संस्कृत विद्यालय की स्थापना करवायी। प्राच्य विद्या के क्षेत्र में किये गये ये शुरुआती प्रयास सफल नहीं हो सके।ईसाई मिशनरियों ने कम्पनी सरकार के इस प्रयास की आलोचना की और पाश्चात्य साहित्य के विकास पर बल दिया।

प्राचीन भारत में जिस शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था वह समकालीन विश्व की शिक्षा व्यवस्था से समुन्नत व उत्कृष्ट थी लेकिन कालान्तर में भारतीय शिक्षा का व्यवस्था ह्रास हुआ। विदेशियों ने यहाँ की शिक्षा व्यवस्था को उस अनुपात में विकसित नहीं किया, जिस अनुपात में होना चाहिये था। अपने संक्रमण काल में भारतीय शिक्षा को कई चुनौतियों व समस्याओं का सामना करना पड़ा। आज भी ये चुनौतियाँ व समस्याएँ हमारे सामने हैं जिनसे दो-दो हाथ करना है। 1850 तक भारत में गुरुकुल की प्रथा चलती आ रही थी परन्तु मकोले द्वारा अंग्रेजी शिक्षा के संक्रमण के कारण भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था का अंत हुआ

भारत की प्राचीन शिक्षा आध्यात्मिमकता पर आधारित थी। शिक्षा, मुक्ति एवं आत्मबोध के साधन के रूप में थी। यह व्यक्ति के लिये नहीं बल्कि धर्म के लिये थी। भारत की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परम्परा विश्व इतिहास में प्राचीनतम है।

डॉ॰ अल्टेकर के अनुसार, वैदिक युग से लेकर अब तक भारतवासियों के लिये शिक्षा का अभिप्राय यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का स्रोत है तथा जीवन के विभिन्न कार्यों में यह हमारा मार्ग आलोकित करती है।

प्राचीन काल में शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया गया था। भारत 'विश्वगुरु' कहलाता था। विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा

www.ignited.in

को प्रकाशस्रोत, अन्तर्दृष्टि, अन्तर्ज्योति, ज्ञानचक्षु और तीसरा नेत्र आदि उपमाओं से विभूषित किया है। उस युग की यह मान्यता थी कि जिस प्रकार अन्धकार को दूर करने का साधन प्रकाश है, उसी परकार व्यक्ति के सब संशयों और भ्रमों को दूर करने का साधन शिक्षा है। प्राचीन काल में इस बात पर बल दिया गया कि शिक्षा व्यक्ति को जीवन का यथार्थ दर्शन कराती है। तथा इस योग्य बनाती है कि वह भवसागर की बाधाओं को पार करके अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर सके जो कि मानव जीवन का चरम लक्ष्य है।

मध्यकाल

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना होते ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। फारसी जाननेवाले ही सरकारी कार्य के योग्य समझे जाने लगे। हिंदू अरबी और फारसी पढ़ने लगे। बादशाहों और अन्य शासकों की व्यक्तिगत रुचि के अनुसार इस्लामी आधार पर शिक्षा दी जाने लगी। इस्लाम के संरक्षण और प्रचार के लिए मस्जिदें बनती गई, साथ ही मकतबों, मदरसों और पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी। मकतब प्रारंभिक शिक्षा के केंद्र होते थे और मदरसे उच्च शिक्षा के। मकतबों की शिक्षा धार्मिक होती थी। विद्यार्थी कुरान के कुछ अंशों का कंठस्थ करते थे। वे पढ़ना, लिखना, गणित, अर्जीनवीसी और चिट्ठीपत्री भी सीखते थे। इनमें हिंदू बालक भी पढ़ते थे।

मकतबों में शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी मदरसों में प्रविष्ट होते थे। यहाँ प्रधानता धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। साथ साथ इतिहास, साहित्य, व्याकरण, तर्कशास्त्र, गणित, कानून इत्यादि की पढ़ाई होती थी। सरकार शिक्षकों को नियुक्त करती थी। कहीं कहीं प्रभावशाली व्यक्तियों के द्वारा भी उनकी नियुक्ति होती थी। अध्यापन फारसी के माध्यम से होता था। अरबी मुसलमानों के लिए अनिवार्य पाठ्य विषय था। छात्रावास का प्रबंध किसी किसी मदरसे में होता था। दरिद्र विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति मिलती थी। अनाथालयों का संचालन होता था। शिक्षा निःशुल्क थी। हस्तलिखित पुस्तकें पढ़ी और पढ़ाई जाती थीं।

राजकुमारों के लिए महलों के भीतर शिक्षा का प्रबंध था। राज्यव्यवस्था, सैनिक संगठन, युद्धसंचालन, साहित्य, इतिहास, व्याकरण, कानून आदि का ज्ञान गृहशिक्षक से प्राप्त होता था। राजकुमारियाँ भी शिक्षा पाती थीं। शिक्षकों का बड़ा सम्मान था। वे विद्वान् और सच्चरित्र होते थे। छात्र और शिक्षकों को आपसी संबंध प्रेम और सम्मान का था। सादगी, सदाचार, विद्याप्रेम और धर्माचरण पर जोर दिया जाता था। कंठस्थ करने की परंपरा थी। प्रश्नोत्तर, व्याख्या और उदाहरणों द्वारा पाठ पढ़ाए जाते थे। कोई परीक्षा नहीं थी। अध्ययन अध्यापन में प्राप्त अवसरों में शिक्षक छात्रों की योग्यता और विद्वत्ता के विषय में तथ्य प्राप्त करते थे। दंड प्रयोग किया जाता था। जीविका उपार्जन के लिए भी शिक्षा दी जाती थी। दिल्ली, आगरा, बीदर, जौनपुर, मालवा मुस्लिम शिक्षा के केंद्र थे। मुसलमान शासकों के संरक्षण के अभाव में भी संस्कृत काव्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन ग्रंथों की रचना और उनका पठन पाठन बराबर होता रहा।

मध्य युग में भारतीय शिक्षा के उद्देश्य

भारत के मध्य युग की शिक्षा का अर्थ इस्लामी अथवा मुस्लिम शिक्षा से है मुस्लिम शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित है

- **इस्लाम का प्रसार -** इस्लामी शिक्षा का पहला उद्देश्य मुस्लमान धर्म का प्रसार करना था। अतः जगह-जगह मकतब और मदरसे खोले गये प्रत्येक मस्जिद के साथ एक मकतब खोला जाता था जिसमें मुस्लिम बालकों को कुरान पढाया जाता था साथ ही मदरसों में इस्लाम का इतिहास, दर्शन, तथा उच्च प्रकार की धर्म संबंधी शिक्षा प्रदान की जाती थी।

- **मुसलमानों में शिक्षा का प्रसार** मुस्लिम शिक्षाशास्त्रियों का विश्वास था कि शिक्षा के ही द्वारा मुसलमानों को धार्मिक तथा अधार्मिक बातों का अन्तर समझाया जा सकता है। अतः मुसलमानों को शिक्षा प्रदान करना इस्लामी शिक्षा का दूसरा उद्देश्य था

- **इस्लामी राज्यों में वृद्धिकरण** इस्लामी शिक्षा का तीसरा इस्लामी राज्यों में वृद्धि करना था। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए मुसलमानों को लड़ने की कला सिखाई जाती थी जिससे वे इस्लामी राज्यों में वृद्धि कर सकें

- **नैतिकता का विकास** इस्लामी शिक्षा का चैथा उद्देश्य नैतिकता का विकास करना था इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लये मुस्लिम बालकों को नैतिक पुस्तकों का अध्ययन कराया जाता था

- **भौतिक सुखों को प्राप्त करना** इस्लामी शिक्षा का पांचवां उद्देश्य भौतिक सुखों को प्राप्त करना था। इसके लिए बालकों को उपाधियाँ तथा मौलवियों को

www.ignited.in

ऊँचे-ऊँचे पड़ दिये जाते थे जिससे वे भौतिक सुखों का आनन्द ले सकें

- **शरियत का प्रसार** इस्लामी शिक्षा का छठा उदेहय शरियत के कानूनों को लागू करना था। अतः शिक्षा द्वारा इस्लाम के कानून, राजनीतिक सिधान्त तथा इस्लाम की सामाजिक परम्पराओं का प्रसार किया गया ।

- **चरित्र निर्माण** मोहम्मद साहब का विश्वास था कि केवल चरित्रवान व्यक्ति ही उन्नति कर सकता है अतः इस्लामी शिक्षा का सातवाँ उद्देश्य मुस्लमान बालकों के चरित्र का निर्माण करना था।

संस्कृत साहित्य

मुगल काल में संस्कृत का विकास बाधित रहा। अकबर के समय में लिखे गये महत्त्वपूर्ण संस्कृत ग्रंथ थे- महेश ठाकुर द्वारा रचित 'अकबरकालीन इतिहास', पद्म सुन्दर द्वारा रचित 'अकबरशाही श्रृंगार-दर्पण', जैन आचार्य सिद्ध चन्द्र उपाध्याय द्वारा रचित 'भानुचन्द्र चरित्र', देव विमल का 'हीरा सुभाग्यम', 'कृपा कोश' आदि। अकबर के समय में ही 'पारसी प्रकाश' नामक प्रथम संस्कृत-फारसी शब्द कोष की रचना की गई। शाहजहाँ के समय में कवीन्द्र आचार्य सरस्वती एवं जगन्नाथ पंडित को दरबार में आश्रय मिला हुआ था। पंडित जगन्नाथ ने 'रस-गंगाधर' एवं 'गंगालहरी' की रचना की। पंडित जगन्नाथ शाहजहाँ के दरबारी कवि थे। जहाँगीर ने 'चित्र मीमांसा खंडन' (अलंकार शास्त्र पर ग्रंथ) एवं 'आसफ विजय' (नूरजहाँ के भाई आसफ खाँ की स्तुति) के रचयिता जगन्नाथ को 'पंडिताराज' की उपाधि से सम्मानित किया था। वंशीधर मिश्र और हरिनारायण मिश्र वाले संस्कृत ग्रंथ हैं- रघुनाथ रचित 'मुहूर्तमाला', जो कि मुहूर्त संबंधी ग्रंथ है और चतुर्भुज का 'रसकल्पद्रम' जो औरंगजेब के चाचा शाइस्ता खाँ को समर्पित है।

हिन्दी साहित्य

बाबर, हुमायूँ और शेरशाह के समय में हिन्दी को राजकीय संरक्षण प्राप्त नहीं हुआ, किन्तु व्यक्तिगत प्रयासों से 'पद्मावत' जैसे श्रेष्ठ ग्रन्थ की रचना हुई। मुगल सम्राट अकबर नेहिन्दी साहित्य को संरक्षण प्रदान किया। मुगल दरबार से सम्बन्धित हिन्दी के प्रसिद्ध कवि राजा बीरबल, मानसिंह, भगवानदास, नरहरि, हरिनाथ आदि थे। व्यक्तिगत प्रयासों से हिन्दी साहित्य को मजबूती प्रदान करने वाले कवियों में महत्त्वपूर्ण थे- नन्ददास, विट्ठलदास, परमानन्द दास, कुम्भन दास आदि। तुलसीदास एवं सूरदास मुगल काल के दो ऐसे विद्वान् थे, जो अपनी कृतियों से हिन्दी साहित्य के इतिहास में अमर हो गये। अर्ब्दुरहमान खानखाना और रसखान को भी इनकी हिन्दी की रचनाओं के कारण याद किया जाता है। इन सबके महत्त्वपूर्ण योगदान से ही 'अकबर के काल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल' कहा गया है। अकबर ने बीरबल को 'कविप्रिय' एवं नरहरि को 'महापात्र' की उपाधि प्रदान की। जहाँगीर का भाई दानियाल हिन्दी में कविता करता था। शाहजहाँ के समय में सुन्दर कविराय ने 'सुन्दर श्रृंगार', 'सेनापति ने 'कवित्त रत्नाकर', कवीन्द्र आचार्य ने 'कवीन्द्र कल्पतरु' की रचना की। इस समय के कुछ अन्य महान् कवियों का सम्बन्ध क्षेत्रीय राजाओं से था, जैसे- बिहारी महाराजा जयसिंह से, केशवदास ओरछा से सम्बन्धित थे। केशवदास ने 'कविप्रिया', 'रसिकप्रिया' एवं 'अलंकार मंजरी' जैसी महत्त्वपूर्ण रचनायें की। अकबर के दरबार में प्रसिद्ध ग्रंथकर्ता कश्मीर के मुहम्मद हुसैन को 'जरी कलम' की उपाधि दी गई। बंगाल के प्रसिद्ध कवि मुकुन्दराय चक्रवर्ती को प्रोफेसर कॉवेल ने 'बंगाल का क्रैब' कहा है।

उर्दू साहित्य

उर्दू का जन्म दिल्ली सल्तनत काल में हुआ। इस भाषा ने उत्तर मुगलकालीन बादशाहों के समय में भाषा के रूप में महत्व प्राप्त किया। प्रारम्भ में उर्दू को 'जबान-ए-हिन्दवी' कहा गया। अमीर खुसरो प्रथम विद्वान् कवि था, जिसने उर्दू भाषा को अपनी कविता का माध्यम बनाया। मुगल बादशाहों में मुहम्मद शाह (1719-1748 ई.) प्रथम बादशाह था, जिसने उर्दू भाषा के विकास के लिए दक्षिण के कवि शम्सुद्दीन वली को अपने दरबार में बुलाकर सम्मानित किया। वली दकनी को उर्दू पद्य साहितय का जन्मदाता कहा जाता है। कालान्तर में उर्दू को 'रेख्ता' भी कहा गया। रेख्ता में गेसूदराज द्वारा लिखित पुस्तक 'मिरातुल आशरीन' सर्वाधिक प्राचीन है।

निष्कर्ष

मध्यकालीन भारत मे काफी हद तक इस्लामी शिक्षा पद्वति विकसित हो चुकी थी। भारतीय रूचि के विषयों जैसे प्राचीन इतिहास और दर्शन, संस्कृत भाषा और साहित्य, हिन्दू धर्म और सामाजिक संगठन की शिक्षा के लिए सरकारी और गैर सरकारी मकतबों और मदरसों में शायद ही कोई व्यवस्था थी। भारत में मुस्लिम आक्रमणों के फलस्वरूप समाज में अनेक कुरीतियां फैल गई। जैसे-कन्यावध, दहेजप्रथा, बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा आदि। इन सब का प्रत्यक्ष परिणाम एवं प्रभाव स्त्री

www.ignited.in

शिक्षा पर पड़ा। इस काल में लड़कियों के लिए पृथक पाठशालाओं की कोई भी व्यवस्था न थी। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए लड़कियां कभी-कभी लड़कों के साथ बैठकर ही पढा करती थी। शाही घरानों में राजकुमारियों के लिए कभी-कभी पण्डित नियुक्त कर दिये जाते थे जो कि उन्हें उच्च शिक्षा प्रदान कर दिया करते थे। हिन्दू परिवारों में ऐसी बहुत कम स्त्रियां थी जिन्हें उच्च शिक्षा प्रदान की गई हो। लड़कियों की शिक्षा प्रायः घर में ही हुआ करती थी। हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों में ही लड़कियों को उच्च शिक्षा प्रदान करने की रीति एवं परम्परा न थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आन्नद सुब्रमण्यम शास्त्री कैसी थी पारंपरिक भारतीय शिक्षा पद्धति

जाफर, एस. एम., एजुकेशन इन मुस्लिम इण्डिया, खुदाबंद स्ट्रीट, पेशावर सिटी, 1936, पृ. 4।

रेवर्टी, तबकाते नासिरी, एशियाटिक सोसायटी ऑफ़ बंगाल, कलकता, 1897, पृ. 552।

डॉ. एस. आर. वर्मा, मध्यकालीन भारत का इतिहास 1200-1761 ई.

शैलेन्द्र सेंगर, मध्यकालीन भारत का इतिहास, अटलांटिक पब्लिकेशन

Corresponding Author

Dr. Anil Kumar*

B.P.S.M.V., Regional Center, Lula Ahir Teaching Assistant, History

dharam.jajoria@gmail.com